होली बन कर होली मनायें

बी० के० सीतलदेवी

मनीषियों ने मानव के मानसिक व आध्यात्मिक उत्थान के लिए कुछ ऐसी परम्पराओं का गठन किया जिसमें मानव सब कुछ भूलकर जीवन का सच्चा सुख ले सके, एक दूसरे से मिलकर परस्पर सौहार्द बढ़ा सके और कुछ समय के लिए तनाव मुक्त होकर अपनी प्राचीन सम्यता पर एक दृष्टि डाल सके। ऐसा ही अवसर है— होली का त्यौहार...।

भारतवर्ष में हर साल फाल्गुन मास में यह त्यौहार आता है। इसमें होली जलाना, रंग डालना, गाने गाना और मिठाइयॉ बांटने आदि के कार्यक्रम होते हैं। इस त्यौहार के पीछे पौराणिक कथा प्रचलित है कि भक्त प्रहलाद को विष्णु की भक्ति से हटाने के लिए हिरण्यकश्यप ने अपनी बहन होलिका की गोद में उसे बैठाकर आग लगादी क्योंकि होलिका को न जलने का वरदान था। परन्तु ईश्वरीय अनुकम्पा से होलिका जल गई और भक्त प्रहलाद सुरक्षित रहे।

अर्थात होली का यह त्यौहार सत्य की असत्य पर विजय का है, सत्य में शक्ति है— इसका प्रतीक है। सत्य ईश्वरीय प्रेम सदा ही विजयी है... इसका प्रमाण है। वास्तव में मन के सभी विकारों को जला देना ही सच्ची होली मनाना है। साल (संवत) के अंत में होली का त्यौहार इस बात का प्रतीक है कि कल्प के अंत में सभी मनुष्यात्माओं ने अपने मनो विकारों की होली जलाई थी और आत्मा योग—अग्नि से पावन होकर वापिस अपने घर लौट गई थीं।

भारतवर्ष में अनेक त्यौहार मनाने की परम्परा है। अन्य किसी देश,धर्म में इतने त्यौहार नहीं मनाये जाते। इसका कारण है क्योंकि भारत में ही स्वयं भगवान आकर अपने दिव्य कर्त्तव्य करते हैं। इसकी यादगार विभिन्न रूपों में मनाई जाती है— कभी दशहरे के रूप में, तो कभी दिवाली, शिवरात्रि आदि के रूप में। प्रत्येक त्यौहार के पीछे कुछ न कुछ रहस्य अवश्य होता है। भगवान इस धरा पर आकर एक ही बार अपने दिव्य कर्त्तव्य करते हैं और इस यादगार को हम हर साल विभिन्न त्यौहारों के रूप में मनाते आ रहे है। परंतु आओ इस बार की होली को हम नवीन ढंग से मनायें। हम केवल होली जलाकर ही प्रसन्न न हो जायें बल्कि अपने मनोविकारों की होली जला दें अर्थात उन्हें छोड़ दें। क्योंकि इन विकारों ने ही मानव को दानव समान बनाया है, इन्होंने ही अहंकार को बढ़ावा देकर व्यक्ति को हिरण्याकश्यप जैसा बनाया है।

ये मनोविकार हमारी सम्पदा नहीं, बल्कि ऐसी अग्नि हैं जो हमारे चित्त को सत्त जलाती रहती है। कोई काम की अग्नि में जल रहा है, कोई लोभ व मोह वश दुखी है तो किसी को ईष्या, द्वेष या अहंकार की अग्नि जला रही है। लोग सोचते हैं कि ये तो सदा से हमारे अंदर रहे हैं, पर क्या इनसे भी छूटा जा सकता है! इसका उनको ज्ञान नहीं है। अब इन विकारों को ज्ञान के द्वारा व परमात्म स्मृति से छोड़ा व जलाया जा सकता है।

तो आओ इस होली के त्यौहार पर हम भ्व्स्त्र (पावन) बनें। भगवान भी यही हमसे चाहते हैं। विश्व के कल्याण हेतु इस पर्व पर हम किसी न किसी विकार की आहुति डाल दें। जब होली जल रही हो तब संकल्प करें कि आज से हम किसी को भी कुदृष्टि से नहीं देखेंगे या आज हम अपने क्रोध की आहुति डाल रहे हैं, आज से हम इस अग्नि में नहीं जलेंगे या आज से हम किसी को भी दुख नहीं देंगे। इस प्रकार होली मनाने से ये होली का त्यौहार आपके लिए यादगार बन जायेगा।

दूसरे दिन सभी एक दूसरे पर रंग की पिचकारी डालते हैं। क्या आपने सोचा कि भला ऐसा क्यों? रंग डालकर कपड़े खराब करना— यह किस बात का प्रतीक है? वास्तव में इसका भी रहस्य यही है कि मनोविकारों की होली जलाने के बाद हम ज्ञान व गुणों के रंगों की पिचकारी एक दूसरे पर डालें। अर्थात गुण सुखायें, सुगंध फैलायें। तो आओ इस बार रंग खेलते हुए हम कुछ गुणों का रंग स्वयं में भी भरें।

सोचें कि आज से मैं नम्रचित ही बन कर रहूँगा...
आज से मैं सुख से मीठे वचन ही बोलूँगा...
आज से मैं सहनशील बन कर रहूँगा...
आज से मैं हर हाल में सन्तुष्ट रहूँगा...
आज से मैं हरहाल में खुश ही रहूँगा...

लोग होली से कई दिन पहले से ही होली गाते है। और रंग उत्सव के बाद होली गाकर उसकी इति श्री कर देते हैं। होली गाना खुशी मनाने का प्रतीक है। तो क्यों न हम इस पर्व पर सदा खुश रहने का संकल्प करलें। कितना अच्छा हो कि सदा ही हमारे मन में खुशी के गीत बजते रहें तो हमें अन्य कोई गीत सुनने की जरूरत ही न पड़े।

तो आओ होली गाने के साथ संकल्प करें कि हम सदा खुश रहेंगे। छोटी—छोटी बातों से हम अपनी खुशी को कभी नष्ट नहीं होनें देंगे। जीवन की समस्याओं का हल हम खुशी—खुशी से करेंगे। चाहे हमें कोई कुछ भी कह दे परन्तु हम अपनी खुशी को गुम नहीं होंने देंगे इस प्रकार अलौकिक ढ़ंग से होली मनाकर हम मुख मीठा करें व करायें अर्थात मधुर वाणी बोलें। अपने जीवन की कटुता का परित्याग करदें। यदि हमारे सम्बन्धों में कहीं दरार आ गई हो तो गले मिल लें। स्वयं आगे बढ़कर इस दरार को भरलें। इस प्रकार होली मनाने से ही यह त्यौहार हमारे लिए सार्थक सिद्ध होगा।

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स

www.bkvarta.com